

ॐ कैं फट कौ मारि यन सखा हा ॥ ॐ क्रो ध भै र य  
 न सखा हा ॥ ॐ रत्न चंद्र यन सखा हा ॥ ॐ वहि देवता यन स  
 खा हा ॥ ॐ कलंज वृक्षा यन सखा हा ॥ ॐ अश्व हास क्षत्र पाला  
 यन सखा हा ॥ ॐ दमरु पायन सखा हा ॥ ॐ पद्म नागरा  
 जा यन सखा हा ॥ ॐ लक्ष्मि व्रतं दामोदरा यन सखा हा ॥  
 पंचोपचार सखा हा ॥ ॐ श्री सौत्र ॥ को मारि मयु ससत्त  
 रुधं सज्जि वरुणा ॥ ॐ दुख भाग को  
 मारि वरुणा सत्त ॥ ॥ वलि विच ॥ ॐ चकार वरुणा स  
 जातं अर्गन को मारि प्राणि प्रती इदं वलि गृह २ रव  
 रवे रवाहि २ को मारि फट स्वा हा ॥ धुलि स्व वपुजा जुल ॥  
 ॥ ध्यालि वरुणा पुर पुजा ॥ सहनि सली ॥ का ॥ संन्दल सः  
 तया व ॥ जाप वपु य ॥ ॐ वज्र वास हि य हं फट ॥ चार ७ ॥  
 ॐ भगवन् श्री गणेश ॥ वज्र योनि नि ॥ जाहा नायः ईदं  
 वज्र पुंनि संनया म ॥ स्वभाव शुभा ॥ वादार्घ्य तय ॥  
 ॐ भगवन् श्री गणेश ॥ वज्र योनि नि ॥ भगवात्का य पाद्यं  
 प्रतिदत्त ॥ ॥ नवो यः ॥ ॐ वज्र वास हि य हं फट स्वा हाः  
 ॐ हां यो मारि नि य हं फट स्वा हा ॥ ॐ ह्रीं २ संनया नि हं फट स्वा हाः



॥ १५२ ॥

ॐ ह्रीं सोमो हनिय हं फट स्वाहा ॥ ॐ हं हं संत्रा ज्ञानिय हं  
 फट स्वाहा ॥ ॐ फट रचदिका य हं फट स्वाहा ॥ पं वाप चा  
 रपुजा ॥ ये धर्मी सोत्र ॥ नत्वा श्रीवज्र वाराहि सर्वपाप प्र  
 मोचने सारविच्छंशानि देवि ॥ बुधत्वं फलदायिनी ॥ ॥  
 विसर्जयाय ॥ काय भले चोगु सिन्ह तं के ॥ दुष्टाता  
 तरचक्र तो निज धुता विन्धु दत्ता भास्वर जग चारि त्रितया  
 त्रैलोक्य सहित पियुरव वारापुर ना बुधना रासागरा विरा  
 वीकरुणा ॥ दसिं धी हरा भावा भवे विचारना श्रीवज्र  
 वाराहि का प्राप्नुव ॥ ॥ धनं ॥ सहनि ॥ सलि ॥ स ॥ सिन्ह ल  
 खत को न चोय ॥ देव या त गिय के ॥ सहनि योय ॥ धनं  
 जजमान न्यात ॥ रहस्य संदल ॥ दन के ॥ ॥ स्वान ॥ जाकि ॥  
 वज्र ॥ जो न का न ॥ ॐ आ श्री सत वजे ॥ इत्यादि ॥ रहस्य सं  
 दलं शुभ साहित ॥ न वन्हा ना काय ॥ संदल विसर्जन या के ॥  
 धनलि ॥ स्वान ॥ स्वयो ॥ धति ना द्योय ॥ न्हा विसति याय ॥ ॥  
 ॐ नमो श्री च ॥ क सं वराय ॥ स सं न्वा हरं नु मा बुधा अस्य  
 रंवादि क्षु र्थीता वज्र सत्व सा चार्ज्य देवता क ह्य या म्य हं ॥  
 वंदे भावादि सं सं गरा सत चनियं ॥ सत गुरु य त



ममायज्ञानसंभवश्रीमतेवज्रदाकांक्षाय  
 किञ्चेत्तत्रवर्तिसिपञ्चज्ञानत्रिकायायत्रानाय  
 जगतेनमः॥यावतोवज्रदाकिन्यस्थीरसंकल्प  
 वदन्ल्लोकाकृतेप्रवर्तिन्यसावत्रिभ्योनमसदा॥  
 स्वभावद्वुष्वा सर्वधर्मीनां स्वभावसुधो हं॥ध्यानः॥  
 नृपीत्याकारेण हेतुवर्जितंरुकारंरूपनासार्थकका  
 रंनकोविस्थीनं सर्वसत्त्वद्वरसाहेतोःशुक्रवर्तिहिं  
 भुजसंकरात्मानंभावयत॥॥धनं हस्तसो धन॥॥  
 दक्षीणहस्ते अकारेणचन्द्रसंदलं॥वामहस्ते अकारेण  
 सूर्यसंदलं॥ॐ वज्रपद्महस्तो हं॥ॐ हजमहिस्वाहा॥  
 हं वीषतय हे हं हहो फट् हं॥रवं॥ॐ वं हायो हिं सो  
 हो हीं हं ह फट् रवं॥॥ॐ हं स्वाहा॥ॐ हो स्वाहा धं ध॥  
 ॐ वज्रसत्त्वसंग्राहक वज्ररत्नमतं वज्रधर्म ग्रायने॥  
 वज्रकर्मकुलोद्भव॥॥वज्र धति ने॥ॐ तर्किज हं॥३  
 संवलसः धिय॥ॐ श्रीवज्रहे रुरक हं फट् दाकिनि  
 जालसवरं स्वाहा॥संरवः धिय॥ॐ रवं दोरोय हं फट्॥  
 पुजा भलः धिय॥ॐ वज्रपुरिषे स्वाहा॥धुं धिय॥ॐ वज्र



ध्रुपे स्वाहा ॥ सतः धिये ॥ ॐ वज्रदिपे स्वाहा ॥ सतः  
 धिये ॥ ॐ वज्रनैवद्य स्वाहा ॥ बलिसः जाकिः लंखः  
 हायके ॥ ॐ अकार सुरव सर्व धर्माणां साद्यन्तु पत्र  
 त्वा ॐ आहं स्वाहा ॥ स दलः धिये ॥ ॐ आहं स्वाहा ॥ तद  
 नुमंत्र पात्र सो धनः मंत्र पात्रः स ॥ ध्वः हायके ॥ सं  
 करोत कश्चन्यतां भाव्य ॥ कंकारे रा अष्टादस भुजा  
 यक सुरवा त्रिनेत्रा खर्गवानां कुसुमस्य कपाले  
 कुलिशं ध्वज ॥ तथा गता तथा घंथा नवो मंत्र वरप्रदा  
 केतका धनु पाशं च खट्वां ग सकल स दल सुर  
 मुंगर वीणा च गान्धर्वा चैतरे करे नं नवजो भन  
 संपन्नां शून्यतां शुभं सुंदरि ॥ ॥ सिंहलः त्रिकोनि  
 चोय ॥ ॐ आहं ॥ ॐ हं होहि अरवं स्वाहा ॥ ॐ अमृतं र  
 अमृतसंभवं ॥ हे हि अमृत प्रवेशये हे हि अमृत  
 प्रवेशय हि ॥ ॐ हकार हरते वशी होकार गंध  
 नास नं हिंकार वीर्य हता च अमृता कारंतु भाव  
 देव ॥ ॥ स्वभाव शुद्धाः प्रादार्थितय ॥ भगवन्  
 श्री सत श्री ३ वारुनि देवि भगवतारके भो पाद्यं



|    |                                                       |    |
|----|-------------------------------------------------------|----|
| १  | प्रतिदस्वाहा ॥ स्वा नवो यः ॥ ॐ नम भगवते वासुदेवाय ॥   | १८ |
| २  | देवि ॥ अमृत्य हो स्वाहा ॥ ॐ श्री हर्ते पीथाय स्वाहा ॥ | २० |
| ३  | ॐ जालं चर पीथाय स्वाहा ॥ ॐ वदिया न पीथाय              | २१ |
| ४  | स्वाहा ॥ ॐ पुरी गिरि पीथाय स्वाहा ॥ ॐ धर्म चक्र       | २२ |
| ५  | स्वाहा ॥ ॐ संभोग चक्राय स्वाहा ॥ ॐ निमीरा च           | २३ |
| ६  | क्राय स्वाहा ॥ महा सुख चक्राय स्वाहा ॥ पंचो पचारः     | २४ |
| ७  | पुजाये धर्माः स्तोत्र ॥ ॐ निलनिलं च नीलं भा ॥ अक्षो   | २५ |
| ८  | भ्य संग संगिनी ॥ भग्या हंता महावीर ॥ ॐ क्षो ॥         | २६ |
| ९  | भव सामाकि ॥ नरपंक्त ॥ विय ॥ हंकार परमं देव            | २७ |
| १० | हंकार सिद्धि भाजन हंकार भवेत्तसुख्य हंकाराय           | २८ |
| ११ | नमस्तुते ॥ ॥ ध्यानयाय ॥ पुस्तलसिजसिखायां              | २९ |
| १२ | दक्षिणैर्करौ आपुष्ट वक्ष्य ज्ववा स करौ रां भुं        | ३० |
| १३ | मध्य द्वय चक्षु घोमां रक्तं चक्षुषो का कक्षयोः        | ३१ |
| १४ | वक्ष्य नक्षयोः त्रिनाभौः को नासिकौ ॥ ॐ ॥ कंसु         | ३२ |
| १५ | रेव नं कथे कां हृदयेः हिं मेतेः प्रिलिं ॐः गुंगू      | ३३ |
| १६ | दे सो उरु युगे सुहं घपो न पादेः सिपादे पूष्टे म       | ३४ |
| १७ | ॐ गुष्टे कु जानु द्वयो पीथो पपिथ क्षत्रो पक्षत्र      | ३५ |



३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

मेरा पको प मेरा प कर म सान प र म सान ॥ ॥ त तो  
 अंग उ स ॥ या य ॥ हं हृदय नं स हि लला ते स्ना हां हं शि  
 रवा यां वीर व त हे वा ह भ्याः ॥ हं हं हो चक्षु दे फ ट र सर वी ग ॥ ॥  
 र व व ॥ ॐ वं ना भो हो या द्वि दि ॥ मो कं थे हीं हीं शि रवा यां  
 हं हं शि र सि ॥ फ ट र सर वी ग ॥ ॥ ध्यानः या य ॥ तत्र स्व कि  
 द ये अकारे न चन्द्र मंद लो परि कुरु न हं कारेः आका  
 र र गत ॐ ॥ कार शुक्ल फ ट र कारा ने ॥ आलिकालि  
 युग ते मध्य शुक्ल र गत कुरु न व री मु च्चा र्थ्य त द क्षर  
 परि नं तं चक्र पत्तम वज्र वा ग्वि शुद्धि च कुरु र्थात् ॥ ॥  
 रुप र कं धे वै रौ च न ॥ वे द न्ता र कं धे व ज्र सु र्ज्य सं  
 शान र कं धे पत्तम नृत्य स्वर संस्कार र कं धे व ज्र स न  
 वि शान र कं धे व ज्र स त्व ॐ सर्व त था गत श्री व ज्र हे रु क  
 व ज्र च क्षु र वो मो ह व ज्र ॥ स्र त यो दे र व व ज्र घ्रा न यो शी  
 र वा व जि ॥ च क्षु यो श ग व ज्र सर्वा य त ने पु रे स्व र्थ्य व ज्र  
 पृथि वि धा तु पा त नि ॥ आप धा तु सार नि ॥ ते जो धा तु  
 रा क र्थ नि ॥ वा यु धा तु पत्तम नृत्य स्वारि ॥ आका स धा तु  
 पत्तम ज्वा रि नि ॥ ॥ पुर तो आलिकालि पंक्ति मध्य



५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

७१

रंकारेनसुख्यसन्दलंततमध्यहंकारपरिणतः॥भगवंतं

कृत्स्नवर्षाषतभुजप्रथमभुजाभ्यांवज्ररघंथाचरंद्विति

याभ्यांखर्गंतर्जनिपासनीतिग्याभ्यांदसकरवत्वांगचतुर

मुखकृत्स्नस्यासरगतपीतांकाकास्याकृत्स्नउल्कास्यास्या

मास्वानास्थारगतशुक्रास्यापीतायसदादिकृत्स्नपीता

यसदुतिः॥पीतरज्जायसदुष्टिनीरगतस्यासायसमथ

निस्यामकृत्स्ना॥दिशंवंधन॥ॐशुभनिसुभनिहंफटः॥

ॐगृहहंफटः॥ॐगृहापयहंफटः॥ॐआनयहोभ

गवंनविद्याराजहंफटः॥ध्यान॥ततोआकारेनंकारेन

सुख्यसदलंततमध्यहंकारेनविश्ववज्रहंकारावि

ष्टितंतद्रस्मिन्नाजवफलप्रसानंवज्रकर्णिकोपरि

रुपरसगंधोगतैवज्रमयिभुसिविभावा॥॥

ॐसैदनिवज्रिभववज्रबंधहं॥ॐवज्रप्राकारभूरव

हं॥ॐवज्रपंजरहंपहं॥ॐवज्रवितानहंरवहं॥

ॐवज्रसरजालत्रांसतांवज्रज्वालानलार्कहंहंकार॥

दिप्राकारजाष्टदिप्राकारंसमिपपिवेशितानिदादि

विन्द्यामंददयकिलयेत॥ॐघघघातय२सर्वद्रुता



५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

नहं फटः ॐ कीलय २ सर्व पानहं फटः ॐ वज्रकीयवज्रधरा  
 आनापयतिः ॐ सर्व विन्यविनायकानां कायवाकश्चित्तव  
 ज्रकिलय २ हं फटः ॐ वज्रमुग्दलां वज्रकिलय साकोत  
 य २ हं फटः ॥ ॥ इति निर्वीघ्न भावयत ॥ ॥ तत्र स्व  
 दय चरु हं कार रस्मि सि ज ग द र्थ कृत्वा अकशि ष भु  
 वन गत्वा तत्र अनादि सं सिद्धि श्री चक्र सं वर भग वं  
 त भगवति स सा सं दल पश्यंत ॥ ततो हि दि जल स्मि  
 मा भी ला कृष्णान चक्र सा का स्य दृष्टा अभिमुख स  
 भि संपुज्य समर समर समर स म दले प्रवेसे समर  
 सीकृत्य मनो मयो भि पुजा देवी भिश्च पुजयत ॥ ॥  
 स्व भाव द्वाः पादा र्घ्यत य ॥ ॐ ऐं ऐं श्री वज्र हे हे रु क  
 प्रवर सत काराय पाद्यं प्रतिद स्वां हा ॥ स्नान वी य ॥ ॥  
 ॐ ३ सर्व बु ध दा कि नि य वज्र वशि ष वज्र वै रो च नि य  
 हं हं फट फट फट स्वां हा ॥ मध्य ॥ ॐ दा कि नि ये हं फटः  
 ॐ रा मा य हं फट ॥ ॐ ख दो रो हा य हं फट ॥ ॐ रू पी नि य  
 हं फट ॥ ॐ वज्र करो त क हं फट ॥ ॐ स म य करो त क  
 हं फट ॥ ॐ वि स म य करो त क हं फट ॥ ॐ स म य वि स



मम

११

७२८  
३५९  
६४६

हीला मम

२१२५

८०० मय करो मय हं फटः ॐ कर र म यं दे हं फटः ॐ कु  
५०० वं दा क्षि य हं फटः ॐ न मा सति हं फटः ॐ त्रा स य र  
१०० म हा ना स हं फटः ॐ म य र वि र स ति य हं फटः ॐ ही र  
र व री रि य हं फटः ॐ र लै के स्व रि य हं फटः ॐ द्र स र  
क्षाय हं फटः ॐ क त र यै रा व ति य हं फटः ॐ द ह र म हा  
मै र वि य हं फटः ॐ पं च र वा यु वे गा य हं फटः ॐ भ क्ष र  
व सुरु चि रा न्त मा ला व सु वि न्य सु रा म धि य हं फटः  
ॐ गृ ह र स प्र पा ना ल गं मे भु जं ग स र्प्य स्वा त र्ज य र  
स्या मा दे वि य हं फटः ॐ आ क थ र सु म द्र य हं फटः  
ॐ ही र ह य क नि य हं फटः ॐ नो र र व गी न नि य हं फटः  
ॐ ज्ये र च क्र वे गे य हं फटः ॐ हा र र व दे रा हे हं फटः  
ॐ हीं सौ दि नि य हं फटः ॐ हं च क्र व र्म नि य हं फटः  
ॐ कि री र सु वि लि य हं फटः ॐ सि रि र स हा व ले  
हं फटः ॐ चि रि र च क्र व नि सी य हं फटः ॐ हि लि र  
स हा वि र्य हं फटः ॐ का र स्या य हं फटः ॐ उ ल का  
स्या य हं फटः ॐ स्वा ना स्या य हं फटः ॐ सु क रा स्या य  
हं फटः ॐ य स दा दि य हं फटः ॐ य स दु ति य हं फटः



ॐ यमदुष्टनियहं फटः ॥ ॐ गोरगायहं फटः ॥ ॐ काला  
 कुलायहं फटः ॥ ॐ कलंकमिषनायहं फटः ॥ ॐ अष्टहा  
 सायहं फटः ॥ ॐ लक्ष्मिवरीहतासनियहं फटः ॥ ॐ घोरां  
 चकारायहं फटः ॥ ॐ किलिक्कलालेवेहं फटः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 पंचोपचारपुजा ॥ येधर्माः सौत्र ॥ रास्याकाय ॥ ॐ वज्रत्र  
 संग्रात्मकवज्ररत्नमन्त्रं वज्रधर्मग्राहिन्पवज्रकर्म  
 कुलोत्तमव ॥ ॐ ॥ ॐ वज्ररास्यहं ॥ ॐ वज्रविन्द्यहं ॥  
 ॐ वज्रगितेही ॥ ॐ वज्रनितेअ ॥ ॐ वज्रगंधीहं ॥ ॐ व  
 ज्रपुष्पेहं ॥ ॐ वज्रधुपेतां ॥ ॐ वज्रदिपेही ॥ ॐ नमोसो  
 हं नमामि नमनम ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ नमो  
 वक्रसंवराय सर्वज्ञानास्पदेहं जगदर्थप्रसादकं  
 वीतामनिद्रविभुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ ॐ ॥  
 व्यापविश्वसहाज्ञानसर्वीमनिस्पदास्थितं कृपा  
 क्रोधमहारुद्रं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॐ नमो भगवते विरविरेस्वरायहं फटः ॥ ॐ नमो भग  
 वते महाकल्पाग्नि संनिभायहं फटः ॥ ॐ नमो जता  
 मकुतोत्तरालभिरवनमुरवायहं फटः ॥ ॐ नमो



स ~~स~~ भुजप्रभास्वराय हं फट ॥ ॐ नमः परसु  
 पासधृतत्रिसु ररवत्तागचारि नित्यं हं फट ॥ ॐ  
 नमः व्याघ्रजिनावरजराय हं फट ॥ ॐ नमः महा  
 धुमांशकाय हं फट ॥ ॐ ॥ धनं ह प्रस्वधना ॥ ॥  
 रगतचंदनं त्रिजो न चोयः वज्रहानि तयः ॐ आ हं ॥  
 पादाद्यं तय ॥ भगवन् श्रीमत् श्रीवज्रजोगि नि भ  
 दारकेभ्यो पाद्यं प्रतिदस्वाहा ॥ नमो नोय ॥ ॐ वज्र  
 वावाहियं हं फटः ॐ हां यो यामि नित्यं हं फटः ॐ सोमो  
 ह नित्यं हं फटः ॐ ह्रीं ह्रीं सचार नित्यं हं फटः ॐ हं हं  
 संत्रास नित्यं हं फटः ॐ फट फट चदिकाय हं फट ॥  
 ॐ हवज्रसत्वाय स्वाहा ॐ नमो ही वैरोचनाय स्वाहा ॥  
 ॐ स्वाहा हं पद्मसुतयस्वराय स्वाहा ॥ ॐ वोपते ह  
 रन्तसंभावाय स्वाहा ॥ ॐ हं हं हो वज्रसुखीय स्वाहा ॥  
 ॥ ॐ फट परमास्व वज्राय स्वाहा ॥ ॐ ॥ पंचौ पचारः  
 ॥ पुजाय धर्माः सौत्र ॥ जगुहानं कोपुया तय ॥ या  
 मिन्या रवतुको हनि भगवति सचारनि सर्वदा  
 संत्रासिन्य तथा परसु विसत्ता जोगि स्वरि चदि



काचत्तारी भुजं मे कश्चा न मुनि निलसितौ गारि  
 स्थासा धुस धुसतत वेद पदं तां देवी उत्पाद भंगरहिताः  
 वरदे ह धारिरण प्रभाविनिचत्रै चातुरूपि वज्रा गना  
 गुनगनी ॥ समलं कृता गि मर्त्य चरया मिसतत ज  
 ननिजितानां ॥ ॥ तरपंत संत्र ॥ ॐ नम भगवते  
 वज्रवा राहिय हं फट ॥ ॐ नम भगवते अपराजिते त्रैलोक्ये  
 के सातरे हं फट ॥ ॐ नम सर्व भूत भगवते हे महावज्र  
 हं फट ॥ ॐ नम वज्रा सने अजिते अपराजिते वस्यं  
 करिनेत्र भाविने हं फट ॥ ॐ नम शैल निशोषनि  
 क्रोधिनि करालिनी हं फट ॥ ॐ नम संवासानिमा  
 रिशि सुप्रभोदिनि पराजिनि हं फट ॥ ॐ नम तय  
 विजयजं भनिमो हनि ये हं फट ॥ ॐ नम वज्रिशि  
 वज्रवा राहि वज्रजो गि का मे स्वरि रवते स्वरि य  
 हं फट ॥ तदनु पाप दे सना ॥ ॐ नम वज्रिशि  
 नु मोदि त मध्यम शिव रि हि ॥ दो रा रा ॥  
 दे स यामि पुरतः पुर कर कर ॥ पर वि दध्य सा क  
 रव गी जि नो तर जि न सुत स भु तारि कु सला



नि सुनु मोदिता निवौवौ संसेक परिनासे नसे  
 परत्तजिनत्रये शरत्त मागे तोस्मि सर्व मोवे नवो  
 चौ चित्तविदध्य अनुत मार्गतथागत ज्ञान इत्यादि  
 योग समय सत्त्वज्ञान सत्त्व र किं लालि क चित्त तं  
 भावयत् ॥ ॥ सिरसलं रव नं हाय ॥ ॐ अभिषिचातु  
 मों सर्व तथागत अभिषेक समय श्री य हं ॥ अभिष्य  
 रं महावज्रं त्रैधातु कं नमस्कृतं पुष्पा कं पुजन थीयम  
 कुत पंचकुलोत्भवं ॥ सिरसवर्जनं धिय ॥ ॐ सर्व  
 बुध बुद्धा मनिमहा सकुतं प्रतिदस्वाहा ॥ पंचमुद्रा  
 के च ॥ ॐ वज्र चाले स्वरि अभिषि च हं ॥ ॐ सत्त्ववज्रि  
 अभिषि च हं ॥ ॐ रत्नवज्रि अभिषि च त्रां ॥ ॐ धर्म  
 वज्रि अभिषि च हं ॥ ॐ कर्मवज्रि अभिषि च आ ॥  
 ध्यान ॥ अद्याभिषिक्त्वा ससि वृक्षे व जाभिषेकत  
 इदं तं सर्व बुध त्वं हूँ हूँ वज्रं सुसिद्धये वजाधि  
 पति त्वा मसि च मिवज्र ना माभिषेकत ॥ श्री हे  
 रं क वज्रनामतथागत ज्ञान नाम भुवस्व ॥ ॥  
 आक रवे नादि पुष्पं न्यास ॥ स्वा मी नो य सिल्लस ॥



ॐ आर्यै रौ चनाय स्वाहा ॥ ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा ॥ ॐ  
 रत्न संभवाय स्वाहा ॥ ॐ अमिताभाय स्वाहा ॥ ॐ अ  
 मोघशिष्येय स्वाहा ॥ ॐ रौ चनाय स्वाहा ॥ ॐ सामकि  
 य स्वाहा ॥ ॐ पांदुराय स्वाहा ॥ ॐ ताराय स्वाहा ॥  
 पंचोपचारपुजाये चर्मा स्तोत्र ॥ रौ चनादि चतुर्देवि  
 शास्वतादि तथा गतः संवुजो बुधसारव्य जापं कुर्वी  
 त सशंसाहित ॥ तर्पन ॥ विद्यः ॥ ॐ दृष्टे २ महाज्ञान  
 सर्व बुधं माहं भवेत् ॥ धनं जापयाय ॥ जापु स्वातः  
 मंदलसंतय ॥ धूपः स्वभावशुभाः पादाद्यंतय ॥  
 भगवंन् श्री सत श्री ३ चक्रसंवर मंदल मदार  
 के भ्यो पाद्यं प्रतिद स्वाहा ॥ स्वानवो यः ॥ ॐ दूकि  
 नित्य हं यः ॥ ॐ रा मा य हं यः ॥ ॐ रव दै रौ य  
 हं यः ॥ ॐ रु पि न्नि य हं यः ॥ ॐ वज्र करौ तका य  
 हं यः ॥ ॐ स मा य करौ तका य हं यः ॥ ॐ वि  
 सम य करौ तका य हं यः स्वाहा ॥ ॐ सम य  
 वि सम य करौ तका य हं यः स्वाहा ॥  
 पंचोपचारपुजाये चर्मा स्तोत्र ॥ ॐ वासा



श्री चक्रसंवराय ॥ सर्वज्ञानसंदेहजगदर्थप्रसा  
 दकं चीतासजिद्विभुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥  
 तर्पणविद्य ॥ हंकारपर्वतं हंकारसिद्धिभाज  
 नं ॥ हंकारभवेदुच्यं हंकाराय नमस्तुते ॥  
 धुलिस्समाधिजुल ॥ ॥ धुतिधुनकाव ॥  
 सकं धौः गरुशः महाकालः सिन्धुः सहनिः सुकुंदाः धुप ॥  
 आवाहननाय ॥ जापः ॐ भगवन् श्रीमान् श्री इ नंदि  
 के स्वरः गरुशः महाकालः कुमारः चक्रसंवरः  
 वज्रवाराहिः वैश्वानरः आवाहनाय इदं वज्रधुपं  
 निसंग्रयास्य हं ॥ ॥ स्वभावशुद्धाः पादाद्यतय ॥  
 भगवन् श्रीमान् श्री इ नंदि के स्वरः गरुशः महाकालः  
 कुमारः चक्रसंवरः वज्रवाराहिः वैश्वानरः देवता  
 भदारकं भ्या पाद्यं प्रतिघृत्वा हा ॥ ॥ स्नानवाय ॥  
 संकं धौ यात ॥ ॐ नंदि के स्वराय स्वाहा ॥ ॐ आयु  
 वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञा वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ धनवृ  
 द्धि य स्वाहा ॥ ॐ प्रज्ञा वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ संज्ञान  
 वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ महासुरव वृद्धि य स्वाहा ॥



गशोश यातः ॐ गं गानपति यस्वाहा ॥ ॐ गताधि  
 पति यस्वाहा ॥ ॐ गरोश्वरा यस्वाहा ॥ ॐ गरापति  
 पुजिता यस्वाहा ॥ ॐ गजवग्ता यस्वाहा ॥ ॐ धाना  
 धिपत यस्वाहा ॥ ॐ महां काल यातः ॐ महां  
 काला यस्वाहा ॥ ॐ कं कालि यस्वाहा ॥ ॐ कुलि के  
 स्वरा यस्वाहा ॥ ॐ चंद्रि श्वरि यस्वाहा ॥ ॐ कुसार  
 यातः कुसारा यस्वाहा ॥ धनुस धरा यस्वाहा ॥ वाच  
 धरा यस्वाहा ॥ सयुरासना यस्वाहा ॥ ॐ सहनि यातः  
 ॐ दं किनि यस्वाहा ॥ ॐ रासा यस्वाहा ॥ ॐ रवं दोरा हाय  
 स्वाहा ॥ ॐ रुपिनि यस्वाहा ॥ ॐ वज्र करोत कायस्वाहा  
 ॐ समय करोत कायस्वाहा ॥ ॐ विस्मय करोत  
 कायस्वाहा ॥ ॐ समय विस्मय करोत कायस्वा  
 हा ॥ ॐ सिंह यातः ॐ वं वज्र वाराहि यं  
 यं यस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं यो यासिनि यं यं यस्वाहा ॥ ॐ  
 ह्रीं सो सो हनि यं यं यस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स वासनि  
 यं यं यस्वाहा ॥ ॐ हं हं सं त्रसनि यं यं यस्वाहा ॥  
 ॐ यं यं चंद्रोका यं यं यस्वाहा ॥ ॐ सुकुंदा यातः



ॐ वैश्ववर्गा यस्वाहा ॥ ॐ मानि भद्रा यस्वाहा ॥ ॐ पुरी  
 भद्रा यस्वाहा ॥ ॐ छन दा यस्वाहा ॥ ॐ वैस्वां नरा यस्वाहा ॥  
 पंचोपचारपुजा ये धर्मा सोत्र ॥ ॥ आयुवृत्तिः ॥  
 जसो वृद्धिः वृद्धिप्रज्ञासुखं यथा ॥ आयु आरोग्यं धनं ॥  
 जनः पुत्रः संतानः सन्तुते सप्तवृद्धिरस्तु ॥ सकं धीयातः ॥  
 ॥ रं वीदं स्वरूपाय विन्द्यराजं विनायकं हे रं वो प्रम  
 देव गरा पति च नमस्तुते ॥ ॥ गंगायातः ॥ कृष्णवर्गा  
 ॥ समारुद्र बुधसा सनरक्षकं कनिकपालधरं  
 विरं श्रीमहं कालनमस्तुते ॥ ॥ महं कालयातः ॥  
 कुमारं महाविरं मयुरासनकुमारं नमस्तुते ॥ ॥  
 कुमारयातः ॥ नमश्चैव कृष्णवराय सर्वजज्ञान  
 संदेहजगदर्थप्रसाधकं चिन्तामणिद्वि  
 भुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ ॥ महं नियातः ॥ नत्वा  
 श्रीवज्रवाराहि सर्वपापप्रमोचनिभारविष्वं  
 मनिदेवि बुधत्वफलदायनिः ॥ वज्रवाराहियातः ॥  
 कजुसुविजनि जातं वैश्ववर्गा माही ज्वलं वैस्वात  
 ॥ महं दे सर्वसंपत्तिदायकं ॥ सुकुंदायातः ॥



तर्प विद्य ॥ हंकार इत्यादि ॥ वलिसं जाकिलं रव ॥ हा येक ॥  
 इमा वलि हं कट स्वाहा ॥ धनं ॥ रवा य ॥ धापि ॥ पुजा या य ॥  
 धापि न स ॥ संत्र पात्र ॥ द्यो न्य तय ॥ धुप ॥ जा प या य ॥  
 जा प स्वा न त य ॥ भगवन् श्री सत श्री नदी के स्वर  
 पंच गो सा ता वा रु नि दे वि आ वा ह न य ॥ भुज ॥  
 धु पं नि सं त्र या स्य हं ॥ विज त य ॥ संत्र पात्र ॥ गु ॥  
 ह हो द्विं अरवं स्वाहा ॥ धापि न रा ॥ ला ॥ द कु ॥ तय ॥  
 अमृत्य र अमृत प्रवेदाय हं ॥ त्रि को न जो य ॥ ॐ आ हं ॥  
 रवा य स ॥ ला ॥ उग ॥ त य ॥ ध्या सं या य ॥ ॥ ॥ अष्ट दल  
 क मलो परि ना ग वल स ध्य व का रे रा वा रु नि स्व भाव  
 त द्रु त ह हो द्विं ॥ द्विं अरवं स्वाहा त दु त्प ना सुरा दे वि ॥  
 व का म रु पि नि उ दि ता क्र व री सं द्वि सा रा क्षा र रा ॥ सं स  
 ल प्र भा ॥ सर्व रत्न वि चि त्रा गि प त्म व री स म प्र भा ॥  
 अष्टा दश भुजा दिव्या संग ल कुरु मे ॥ ॥ ॥  
 स्व भा व गु धा ॥ पा दा र्घ त य ॥ भगवन् श्री सत श्री  
 न दि के स्वर पंच गो सा ता वा रु नि दे वि ॥ पा दा र क र्था  
 पा शं प्रति द्ध स्वा हा ॥ स्वा न वी य ॥ ॐ न द्रा य स्वा



ॐ भद्राय स्वाहा ॥ ॐ जया यस्वाहा ॥ ॐ सौम्या यस्वाहा ॥  
 ॐ कपिलाय स्वाहा ॥ ॐ सहजानंदाय स्वाहा ॥ ॐ  
 विमलानंदाय स्वाहा ॥ ॐ पंचगोमताय वज्रपुष्पप्रति  
 दस्वाहा ॥ रवाजयातः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवे  
 ॐ अमृत्युय स्वाहा ॥ ॐ श्रीहर्ते पिथाय स्वाहा ॥ ॐ जालं  
 धर पिथाय स्वाहा ॥ ॐ वदियाय स्वाहा ॥ ॐ  
 पुर्णशिखि पिथाय स्वाहा ॥ ॐ चर्चक्राय स्वाहा ॥ ॐ  
 संभोगचक्राय स्वाहा ॥ ॐ निर्वीजचक्राय स्वाहा ॥ ॐ  
 महासुरचक्राय स्वाहा ॥ ॐ पंचोपचारपुजाः ॥  
 ॐ नमो सौत्र ॥ नमो भद्रा जया सौम्या कपिला च  
 ॐ वावति पंचगोमताय नमस्तुते ॥ रवाजयातः  
 ॐ निलनिलां च निलं भा ॐ अक्षोभ्यसंगसंगिनिः  
 भग्याहंता महाबाक्य ॐ अक्षोभ्य भवो नामकि ॥  
 शापिनातः ॥ ॐ तर्पण विद्य ॥ हंकारः इत्यादि ॥  
 ॐ नमो भगवते ॐ वलं रवायक्यः ॐ अकालं सुरवदयदिः  
 ॐ नमो भगवते ॐ पुजाः ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥



# आशा सहकाथि

२२

ASHA ARCHIVES

वाक् पुजा दाय ॥ मजसा नयातः रहस्य सो दल देने के ॥  
 दे गुलि वलि विरा ॥ लं रव हाय के ॥ ॐ नमो भगवते  
 मुरव सर्व धर्मी नं ना धनु त्पे नता ॐ नमो भगवते ॥  
 स्वभाव वगु धा नादा र्ध तय ॥ म ग व नू शी ना न श्री  
 अष्ट भैरवः अष्ट सतुकाः अष्ट लोक सा लः  
 भव र के भ्यो पाश प्रति दस्वा हा ॥ स्वा ने वा य ॥  
 व द ह भैरवा य स्वा हा ॥ ॐ यो मे तां ग भैरवा य स्वा हा ॥  
 रु रु भैरवा य स्वा हा ॥ वं दू भैरवा य स्वा हा ॥ को ध  
 भैरवा य स्वा हा ॥ व न म त भैरवा य स्वा हा ॥ व न म त  
 य स्वा हा ॥ ॥ व ह्ना य कि य स्वा हा ॥ इ द्रा य  
 स्वा हा ॥ के मारि य स्वा हा ॥ वि नु री य स्वा हा ॥  
 वा रा हि य स्वा हा ॥ वा सु द्रा य स्वा हा ॥ न हा वा क्ष्म य  
 स्वा हा ॥ ॥ पं चो प चार पुजाः ॥ ॐ नमो भगवते ॥  
 त र पं न विरा ॥ के जल न न्य ॥ व स म यु  
 यो नः या य ॥ न्हा नः सं न्य ॥ ३ स्व क क के  
 अ नं दान पति व य ॥ ॥ न्हा पो र  
 या य के ॥ अ नं गु र पुजाः या य के ॥